इकाई 12 मीडिया एवं साइबर नीतिशास्त्र

रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 परिचय

12.2 मीडिया और साइबर–स्पेस में नैतिक मुद्दे

12.3 प्रिंट मीडिया में नैतिक मुद्दे

12.4 इलेक्ट्रॉनिक (टेलीविजन) मीडिया में नैतिक मुद्दे

12.5 साइबर–स्पेस में नैतिक मुद्दे

12.6 मीडिया, न्याय और समाज

12.7 प्रेस की स्वतंत्रता, सेंसरशिप और कानून

12.8 सारांश

12.9 कुंजी शब्द

12.10 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

12.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

यह इकाई कोशिश करती है,

- मीडिया से संबंधित सभी मौलिक नैतिक समस्याओं और उससे जुड़े तर्क–वितर्कों को जांचने की।
- सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के विकास के उपरान्त साइबर–स्पेस में उभरती चिंताओं के अन्वेषण की।

12.1 परिचय

''मीडिया'' शब्द को हमेशा व्यापक संदर्भ और वैचारिक परिदृश्य में देखा गया है। इसमें समाचार पत्र, टेलीविजन, विज्ञापन, रेडियो, टेलीफोन, पत्रिका और इंटरनेट शामिल हैं। (इस

* श्री मोहम्मद इरशाद, सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग, इन्द्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय। अनुवादक– डॉ. प्रीति रानी, सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग, हंसराज महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

इकाई में 'मीडिया' की अवधारणा को उसकी पारंपरिक समझ तक सीमित रखने के बजाय कहीं अधिक व्यापक संदर्भ में देखा गया है।) मीडिया सूचना और ज्ञान के निर्माण, संरक्षण और प्रसारण का एक प्रमुख स्रोत है, इसलिए इसे लोगों को सूचित और शिक्षित करने के महत्वपूर्ण साधन के रूप में समझा जाता है। यह ज्ञान की ठोस ज्ञानमीमांसीय इकाई है। अतः, यह एक अहम भूमिका निभाता है। इसे न तो सरकार और कॉर्पोरेट संगठनों के (प्रोपोगैंडा) को आगे बढ़ाना चाहिए और न ही इनके प्रचार तंत्र के रूप में काम करना चाहिए। ऐतिहासिक दृष्टि से मनुष्य ने प्रिंट मीडिया से शुरुआत की थी, तकनीकी युग के अभ्युत्थान के कारण, एक अनूठे व विशिष्ट प्रकार का मीडिया साइबर और डिजिटल मीडिया के रूप में प्रभाव में आया। मानव इतिहास के हाल ही के समय में, हम त्वरित गति से अत्यधिक सूचनाओं के संपर्क में आए हैं। यह अनुभव से स्पष्ट हो जाता है कि मीडिया ने डिजिटल दुनिया में छलांग लगा दी है, जो मूल रूप से पारंपरिक प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से अलग है। डिजिटल मीडिया अब तक विकसित किए गए पहले के मीडिया के किसी भी अन्य रूपों की तुलना में अधिक तेजी से सूचना का प्रसार करता है। यह आसानी से उपलब्ध, कम खर्चीला और दुनिया की दूरी को काफी कम कर देता है। इसने स्थान और समय की धारणा को बदल कर रख दिया है।

मीडिया, अकाट्य रूप से, हमारी जानकारी का एक प्रमुख और प्रभावी माध्यम बन गया है। पर यह नैतिक प्रश्नों की परिधि के बाहर नहीं है। इसे सही दिशा में चलाने के लिए हमें कुछ नैतिक मानदंडों, सिद्धांत और नियम विकसित करने चाहिये ताकि यह अपने वास्तविक कार्य – सटीक सूचना के प्रचार से समाज कल्याण बढ़ाना को साकार कर सके। यह इसमें प्रामाणिकता, पारदर्शिता और जवाबदेही लाने के लिए इसके नैतिक अन्वेषण की मांग करता है। यह अध्याय आंशिक रूप से मीडिया की प्रकृति और सिद्धांतों का निरीक्षण करता है; हालाँकि, मुख्य रूप से यह मीडिया का मानकीय वर्णन करता है।

मीडिया लोगों को जानकारी देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ताकि वे अधिक ठोस और तर्कसंगत निर्णय ले सकें। मीडियाकर्मी को हर समय तटस्थ नहीं रहना चाहिए, क्योंकि कभी–कभी कुछ विचार और राय स्वाभाविक रूप से तर्कहीन और अल्पविकसित होते हैं, इसलिए उन्हें अनदेखा और अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए। मीडिया का काम लोगों को सार्थक सूचना देने के लिए बिना तथ्यों का संदर्भ पता लगाए सिर्फ उन्हें प्रस्तुत करने तक सीमित नहीं है। ग्राहम (1998, पृष्ठ 162) का तर्क है कि ''विचारशील न्यूज

रिपोर्ट का उद्देश्य समाचार पत्रों और रेडियो और टेलीविजन पर जो कुछ घटित हुआ है सिर्फ उसका ब्यौरा देना नहीं है, बल्कि घटनाओं को इस तरह से प्रस्तुत करना है जो उनके राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व को उजागर और स्पष्ट कर सके।''

उदारवादी प्राधार से मीडिया की व्यापक तौर पर प्रजातंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में चर्चा की गयी है। इसे कुछ छूट (स्वतंत्रताएं) मिली हुई हैं और कुछ न्यायसंगत कर्तव्य हैं। मीडिया में उदारवादी प्राधार जीवन के सभी आयामों से सरकार के हस्तक्षेप को मूलतः कम कर उसकी जवाबदेही तय करने की चेष्टा करता है। इससे भी अधिक, यह सरकार को लोगों के अधिकारों को कम करने के लिए उसकी सत्ता का प्रयोग करने की अनुमति नहीं देता है। इसलिए, यह स्वायत्तता, अखंडता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और लोगों के सूचना के अधिकार की बात करता है। मीडिया के उदारवादी प्राधार में मानवीय गरिमा और अखंडता को हमेशा अटूट सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों के रूप में जाना जाता है।

मीडिया नैतिकता मीडिया के कामकाज और पूरी प्रक्रिया में सामने आने वाली नैतिक चिंताओं को दूर करने का प्रयास करती है। संक्षेप में, मीडिया नैतिकता के अंतर्गत मुख्य रूप से इस बहस पर चर्चा की गयी है कि प्रैस की कार्य पद्धति क्या हो और इसे कैसे सर्वश्रेष्ठ तरीके से पूरा किया जा सकता है (बेरी, 2008, पृष्ठ 77)। यह अपेक्षाकृत नया विषय है और मीडिया के मानकीय विचार (Normative) से संबंधित है, बजाय कि इसे एक वर्णनात्मक शैली (Descriptive) तक सीमित किया जाए।

मीडिया नैतिकता, नैतिकता का व्यावहारिक क्षेत्र है। इसलिए, हमें व्यवहार में बुनियादी नैतिक सिद्धांतों के अनुप्रयोग को देखना चाहिए। एक अनुप्रयुक्त विषय होने के कारण, इसका समाज के कल्याण और हित के लिए बहुत बड़ा सामाजिक उत्तरदायित्व है। ऐसे कई विचारक और नैतिकतावादी हैं, जिन्होंने मीडिया में महत्वपूर्ण नैतिक मुद्दों पर गहन रूप से विचार किया है।

हम दार्शनिक के रूप में ज्ञान और प्रज्ञा की खोज में हैं। प्राचीन यूनानी दार्शनिक सुकरात (470 – 399 ईसा पूर्व) नैतिकता को मानव आचरण के केंद्र में लाया। यह पूर्व–सुकरात दार्शनिकों के प्राकृतिक दर्शन से एक उल्लेखनीय बदलाव था। उनके लिए, एक अच्छा, सार्थक और योग्य जीवन कैसे जिया जाए, यह प्रमुख दार्शनिक चिंता थी। यह समझने के लिए कि एक न्यायपूर्ण और अर्थपूर्ण मीडिया के विकास के लिए क्या चाहिए इसी चिंतन को मीडिया के क्षेत्र में भी आगे बढ़ाया जाना चाहिए। सिर्फ मीडिया का होना ही सराहनीय

नहीं है बल्कि किसी भी प्रबुद्ध समाज में मूल्यों से संचालित मीडिया को पूजनीय माना जाता है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणीः अ) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

आ) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए

1. मीडिया नैतिकता क्या है?

_____

_____

_____

_____

_____

12.2 मीडिया और साइबर–स्पेस में नैतिक मुद्दे

मीडिया नैतिकता अध्ययन का एक व्यापक विषय है। पत्रकारिता के लिए एक विषय चुनने से लेकर लेखों के निर्माण तक, समाचारों को साझा करने/ प्रसारित करने तक में नैतिक मुद्दे शामिल हैं। मीडियाकर्मियों/ संचारकों को विषय– वस्तु निर्माण/ कहानी के हर चरण पर नैतिक मुद्दों से निपटना होगा। हाल ही में मास (जनसंचार) मीडिया एक अत्यधिक प्रशंसनीय प्रोफेशन बन गया है; इसलिए, मीडिया प्रोफेशनल के समक्ष उत्पन्न विभिन्न प्रासंगिक मुद्दे प्रकृति में भिन्न होते हैं। मीडिया प्रोफेशनल की पूरी कार्यप्रणाली में नैतिकता का समावेश प्रामाणिकता, सच्चाई, पारदर्शिता और अखंडता को ओर आगे बढ़ाता है। मीडिया नैतिकता नैतिक निर्णय देने के लिए महत्वपूर्ण है कि किस जानकारी को साझा किया जाना है या नहीं। मेरिल (1999, पृ. 5) कहते हैं "मीडिया नैतिकता दर्शनशास्त्र की एक शाखा है जो पत्रकारों और अन्य मीडियाकर्मियों को यह निर्धारित करने में मदद करती है कि उन्हें अपने काम में कैसे व्यवहार करना चाहिए। अपने व्यावहारिक अनुप्रयोग में, यह आचरण का एक आदर्श विज्ञान है, जिसमें आचरण को मुख्य रूप से स्वनिर्धारित, तार्किक और स्वैच्छिक माना जाता है।''

दूसरी ओर, साइबर नैतिकता कई तरह के मुद्दों को देखती है जिसमें कॉपीराइट, वित्तीय धोखाधड़ी, स्पैम, पेटेंट संरक्षण, डिजिटल पहचान, डिजिटल हस्ताक्षर, ऑनलाइन पायरेसी,

साइबर चोरी, साइबर थ्रेट, गोपनीयता, पोर्नोग्राफी, हेट स्पीच, और अपंजीकृत साइटों से सामग्री को उसके स्वामी को दरकिनार कर उसकी अनुमति के बिना डाउनलोड करना शामिल हैं। ऑक्सफोर्ड के दार्शनिक लुसियानो फ्लोरिडी नैतिक समस्या 'अव्यवस्था' (Entropy) को पूरे सूचना क्षेत्र में पाते हैं। सूचना क्षेत्र और साइबर क्षेत्र बराबर हैं।

कीरन (1998, पृ. 3) का तर्क है कि ''जब भी हमें सूचना दी जाती है, चाहे वह समाचार पत्रों, टेलीविज़न, इंटरनेट या अन्य किसी स्रोत से हो, हमारे पास उसकी विश्वसनीयता जांचने के लिए अपनी दैनिक समझ–बुझ उपयोग करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं होता। यह चित्रण पर लिखित और मौखिक शब्दों जितना ही समान रूप से लागू होता है।

12.3 प्रिंट मीडिया में नैतिक मुद्दे

प्रिंट मीडिया पारंपरिक रूप से संचार के सबसे मजबूत और विश्वसनीय साधनों में से एक के रूप में जाना जाता है। हालाँकि, हो सकता है यह इस सूचना युग के लिए सत्य नहीं रहे। मीडिया में आर्थिक संभावनाएं प्रमाणिकता और सत्य को इसके मुख्य चालक बनने से रोक सकती है। समाचार लिखने वाले पत्रकारों को प्रोफेशनल के रूप में पारदर्शी, वस्तुनिष्ठ और निष्पक्ष होना चाहिए। भ्रष्टाचार, दोगलेपन और धोखाधड़ी उजागर करने जैसे मामलों को छोड़कर किसी व्यक्ति के बारे में प्रकाशित करने से पहले उन्हें अनुमति लेनी चाहिए।

प्रिंट मीडिया में अधिकांश पत्रकार ताजा और नये समाचार/कथा निर्मित करने के लिए 'स्रोतों' चाहे कोई व्यक्ति, राजनीतिज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता, अधिकारी, वकील, कॉर्पोरेट नेता, कार्यालय कर्मचारी और कोई अन्य विश्वसनीय व्यक्ति पर जानकारी प्राप्त करने के लिए बहुत अधिक निर्भर करते हैं। फिर भी, उनसे काफी दूरी बनाकर रखनी चाहिए ताकि आपके द्वारा लिखा समाचार/कथा उनके साथ आपके भावनात्मक और मैत्रीपूर्ण बंधन से प्रभावित न हो। ऐसा करने में विफलता के परिणामस्वरूप से सच्चाई, ईमानदारी, निष्पक्षता और जनहित से समझौता होगा जिन्हें मीडिया के निर्विवाद मूल्य के रूप में जाना जाता है। एक ऐसी कथा का निर्माण करना महत्वपूर्ण है, जो बदले में लोगों को सशक्त बनाती है और एक अच्छी तरह से सूचित और जानकार समाज की स्थापना के लिए सही जानकारी प्रदान करती है। सारणीकरण और सनसनीखेज कहानियों से बचने के लिए कथा निर्माण

और प्रकाशन के दौरान दूसरे व्यक्ति की ईमानदारी और गोपनीयता से समझौता नहीं किया जाना चाहिए। पत्रकार नैतिकता समाचार की आड़ में राय और काल्पनिक कहानियों को प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

एक कहानी करने का निर्णय लेने की प्रक्रिया, क्या उपयोग किया जाएगा का चयन करना, और इस सामग्री को व्यक्त करना सभी नैतिकता पर प्रभाव डालते हैं और मीडिया के व्यक्ति के नैतिक चरित्र को प्रभावित करते हैं (मेरिल, 1999, पृष्ठ 1)। सत्य और प्रामाणिक समाचार प्रदान करने के लिए प्रिंट मीडिया की सक्रिय सामाजिक भूमिका है। केवल मीडिया का अस्तित्व हमारे लिए कोई अच्छा और अर्थ पैदा नहीं करेगा, जब तक कि इसके व्यवहार में नैतिक मानकों का प्रदर्शन नहीं किया जाता है। वैचारिक पूर्वाग्रह ईमानदारी और सच्चाई जैसे पत्रकारिता मूल्यों को मीडिया में आगे बढ़ने से रोक सकता है।

पत्रकारों को जाति व्यवस्था, धर्म, लिंग और लिंग आधारित भेदभाव जैसी सामाजिक बुराइयों को हर स्तर पर, यहां तक कि मीडिया की संस्था के भीतर भी खत्म करने के लिए असुविधाजनक सवाल पूछने चाहिये। उन्हें जानबूझकर तथ्य को विकृत और गलत रिपोर्ट नहीं करना चाहिए; इससे समाज में अशांति और गंभीर सांप्रदायिक तनाव हो सकता है। उदाहरण के लिएरू तथ्यों और आंकड़ों को विकृत करके एक नकली समाचार को द्वारा बढ़ावा दिया जाता है जैसे एक मामले में यह रिपोर्ट कि एक निश्चित धर्म 'स' से संबंधित व्यक्ति 'अ' दूसरे धर्म को गालियां दे रहा था और अपमान कर रहा था, हालांकि मामले के तथ्य यह है कि, व्यक्ति 'अ' नशे में था, टूटा हुआ था और शराब और नशीली दवाओं के प्रभाव में अनैतिक व्यवहार कर रहा था, जानबूझकर नहीं। वह मन की सामान्य और तर्कसंगत स्थिति में नहीं था।

नैतिक मीडिया की जिम्मेदारी व्यक्ति अ की कहानी के बाद के हिस्से की अनदेखी न करके, संबंधित समाचार के बारे में सभी प्रासंगिक तथ्यों को सूचित करके व्यक्ति अ के समाचार को प्रस्तुत करना है। एक कहानी/समाचार में सभी प्रासंगिक तथ्यों को छिपाने से समाज के लिए गंभीर नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं, यह संभवतः तनाव और असहमति को उत्प्रेरित कर सकता है। इसे प्रिंट मीडिया में अनैतिक रिपोर्टिंग का मामला माना जाएगा।

बोध प्रश्न II

टिप्पणीः अ) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

आ) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. प्रेस की किसी भी कहानी में पत्रकारों द्वारा नैतिक रूप से किन प्रमुख मुद्दों का ध्यान रखा जाना चाहिए?

_____

_____

_____

_____

_____

12.4 इलेक्ट्रॉनिक (टेलीविजन) मीडिया में नैतिक मुद्दे

प्रिंट मीडिया के अलावा, लोग क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मामलों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर बहुत अधिक भरोसा करते हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में समाचार तेजी से प्रसारित होता है, जबकि प्रिंट में समाचार की गति अपेक्षाकृत धीमी होती है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रभावी रूप से उन लोगों तक पहुंच सकता है जो पढ़ और लिख नहीं सकते; इसलिए यह मीडिया के अधिक प्रभावशाली माध्यम के रूप में फैला। इसकी श्रव्य–दृश्य (ऑडियो–विजुअल) प्रकृति इसे आम लोगों तक पहुंचने के लिए एक प्रमुख उपकरण के रूप में मजबूत करती है। हालांकि, यह मीडिया सामग्री में काफी पूर्वाग्रह और हेरफेर भी ले आया, जिसके परिणामस्वरूप आंशिक रूप से सरकार, नौकरशाही और बड़े व्यापारिक घरानों के लिए प्रचार तंत्र का निर्माण हुआ। लोगों ने इसकी पारदर्शिता और समाज के बड़े उद्देश्य के प्रति प्रतिबद्धता पर सवाल उठाना शुरू कर दिया। कॉरपोरेट और बड़े उद्योगपतियों ने मीडिया क्षेत्र में विशाल बाजार देखा। परिणामस्वरूप उन्होंने पत्रकारिता के महान क्षेत्र को लाभ कमाने वाले उद्योग के रूप में विकसित करने के लिए बड़े पैमाने पर निवेश किया । जैसा कि यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने माना है, नैतिक गुण मनुष्यों में सहज और स्वाभाविक नहीं है। उन्होंने प्रभावी रूप से तर्क दिया कि मनुष्य सही तरीके से कार्य निरंतर करने की आदत के साथ नैतिक दृष्टिकोण विकसित करने में सक्षम हैं। अगर मीडिया लंबे समय तक वास्तविक नैतिक सिद्धांतों से नहीं हटता है, तो अधिकतर परिणामस्वरूप, इसकी संगठनात्मक संरचना में मूल्य आसानी से समाहित हो जाते हैं ।

ऑडियो–विजुअल ग्राफिक्स के माध्यम से क्या कवर, प्रसारित और चित्रित किया जाना है, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रमुख नैतिक चिंताओं का एक केंद्रीय हिस्सा है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में अश्लीलता, जातिवाद, नस्लवाद, हेट स्पीच हेट स्पीच, स्पष्ट अश्लील साहित्य, गोपनीयता, निजिता और समलैंगिकता जैसे नैतिक मुद्दों को भी शामिल किया गया है। ग्राफिक्स की मदद से सनसनीखेज खबर सच्ची, प्रामाणिक और सार्थक कहानियों को अस्तित्व में आने से रोक सकती है। यह गंभीर रूप से लोगों के सच्चाई जानने के अधिकार को कमजोर करता है।

पत्रकार सही जानकारी देने और समाज के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक ढांचे पर नजर रखने के लिए होते हैं। उन्हें अपने वैचारिक पूर्वाग्रह और पक्षपात के कारण बिना जाँच के लोगों की निंदा करने से हमेशा बचना चाहिए। एक न्यायपूर्ण और समतावादी समाज को आगे बढ़ाने के लिए समाज की सच्ची अंतरात्मा होने की उनकी एक बड़ी जिम्मेदारी है। वे विधायक, कार्यकारी और न्यायिक अधिकारी नहीं हैं। यदि वे ऐसी गतिविधियों का सहारा लेते हैं, तो उन्हें अनैतिक कहा जा सकता है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित पक्षपातपूर्ण सूचना जनसाधारण तक पहुँचती है, परिणामस्वरूप व्यक्ति की सत्यनिष्ठा, विनयशीलता और गोपनीयता से अत्यधिक समझौता करना पड़ता है। मीडिया के इस तरह के कृत्यों को अनैतिक और अन्यायपूर्ण माना जाता है, इसलिए इन्हे अस्वीकृत किया जाना चाहिए। मीडिया को कॉर्पोरेट दिग्गजों और मीडिया के मालिक, जो सच्चे और पारदर्शी मीडिया की कीमत पर अधिकतम मौद्रिक परिणाम उत्पन्न करने की इच्छा रखते हैं, को खुश करने के लिए मौद्रिक और राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए ''फर्जी समाचार'' बनाने से बचना चाहिए।

एक विश्वसनीय और जिम्मेदार मीडिया प्रामाणिक रूप से तथ्यों की जांच और पुष्टि करने से पहले निर्णय नहीं देता है, जब तक कि ये आधिकारिक और विश्वसनीय रिकॉर्ड द्वारा प्रमाणित नहीं होते हैं। मनोचिकित्सक और मीडियाकर्मी अपने सूचना के स्रोतों की गोपनीयता बनाए रख सकते हैं। हालांकि, लोकतांत्रिक व्यवस्था में मीडिया को जनता के हितों का उल्लंघन करके सरकार को बचाने के लिए जानकारी नहीं छुपानी चाहिए। हैकिंग, हालांकि व्यापक रूप से अनैतिक मानी जाती है, का उपयोग अन्यायपूर्ण प्रथाओं को उजागर करने के लिए एक नैतिक उपाय के रूप में भी किया जाता है। उदाहरण के लिए, 21वीं सदी के शुरुआती पहले दशक में, विकीलीक्स के संस्थापक जूलियन असांजे ने

सार्वजनिक हित से संबंधित राजनेताओं, बड़े व्यवसायों और दुनिया भर की सरकार की छिपी जानकारी को उजागर करना और प्रकट करना शुरू कर दिया, विशेष रूप से; इसे पारदर्शिता लाने के लिए सक्रियता के एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया गया, मीडिया के एक बड़े वर्ग ने इसे नैतिक माना। अगर विकीलीक्स ने व्यक्तिगत डेटा को नागरिकों के 'निजता के अधिकार' का उल्लंघन करके उजागर किया होता, तो इसे स्वाभाविक रूप से निजी जानकारी को लीक करने के लिए अनैतिक माना जाता।

चूंकि दुनिया का बड़ा हिस्सा नीतिगत स्तर पर समाजवादी और कल्याणकारी राज्यों से पूंजीवादी राज्यों में स्थानांतरित हो रहा है। प्रारम्भिक रूप से, हम कॉर्पोरेट नेतृत्व वाले मीडिया प्रवेश को पूरी तरह से नकारने में समर्थ नहीं हैं, बात यह है कि इसे मूल्य आधारित और जन केंद्रित मीडिया में परिवर्तित करना होगा। प्रारंभ में, मीडिया को अधिक जवाबदेह बनाने के लिए कोई प्रभावी नियामक ढांचा नहीं था। नियमित दुरुपयोग के कारण, लोग मीडिया के लिए एक अधिक मजबूत कानूनी और नैतिक ढांचा तैयार करने की मांग कर रहे हैं।

12.4.1 राजनीतिक एजेंडा और पेड न्यूज

राजनीतिक प्रचार और पेड न्यूज का प्रसारण बिना ज्यादा स्पष्टीकरण के किया जाता है ताकि मौद्रिक लाभ हासिल किया जा सके और दर्शकों को धोखा दिया जा सके। यह राजनेताओं द्वारा विषय – वस्तु को मोड़ – तरोड़ कर प्रस्तुत कर चुनाव जीतने के लिए, बड़े व्यवसाय द्वारा उत्पाद की अच्छी प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए, निजी कंपनियों द्वारा लोगों को झूठी उम्मीद देने के लिए किया जाता है। इसे बड़ी सूक्ष्मता से किया जाता है और समाचार के रूप में आगे बढ़ाया जाता है। चुनाव किसी विशेष पार्टी, उसके नेताओं और नीतियों के समर्थन में समाचार को प्रामाणिक और सत्य समाचार के रूप में पेश करके लोगों की सहमति को ड़ – तरोड़ कर अपने फायदे के लिए बदलने का सबसे अच्छा समय है। यह किसी भी मीडिया की अखंडता और लोकतंत्र के चौथे ''श्रद्धेय स्तम्भ'' की कीमत पर किया जाता है। इस तरह के अभ्यास को बढ़ावा देना समाज के स्वास्थ्य और सामान्य रूप से लोकतंत्र पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। यह लोगों से सच्ची जानकारी छुपाता है और उन्हें किसी विशेष विषय, पार्टी और नीति के बारे में उचित राय

बनाने से रोकता है। डगमगायी खबरों से संपर्क समाज को कमजोर और खोखला बना देगा।

यह उस समाज में और अधिक समस्याग्रस्त हो जाता है जहां लोगों का एक बड़ा वर्ग पढ़ने और लिखने में असमर्थ होता है। वे 'पेड न्यूज़' को सही मान लेते हैं क्योंकि उनके पास अपवर्ज्य और डगमगायी खबरों को पहचानने की बौद्धिक क्षमता नहीं होती है। इसके विपरीत, जिस समाज में अधिक लोग शिक्षित होते हैं, वहाँ इस बात की बहुत अधिक संभावना होती है कि लोग काफी हद तक नकली समाचारों का पता लगाने में सक्षम हों। एक जागरूक सिविल सोसाइटी की कल्पना तभी की जा सकती है, जब बहुसंख्यक लोग पढ़े –लिखे हों, ऐसी व्यवस्था में फेक न्यूज और पेड न्यूज नहीं पनपेंगे और इनका प्रसार अपेक्षाकृत कम होगा। प्रौद्योगिकी के दर्शन के अग्रणी, एंड्रयू फीनबर्ग (1999) ने प्रौद्योगिकी के लोकतंत्रीकरण के लिए तर्क दिया। आईसीटीएस द्वारा सृजित साइबरस्पेस का लोकतंत्रीकरण किया जाना चाहिए ताकि वास्तव में लोगों के हितों को पोषित किया जा सके और मीडिया की संपूर्ण संरचना में विविधता को शामिल किया जा सके। जैसा कि मैकनेयर (1998, पृ. 49) कहते हैं, ''इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की नज़रों से बचकर, राजनेता और अन्य संभ्रांत समूह पत्रकारिता के आक्रमण से अपेक्षाकृत मुक्त होकर अपने व्यवसाय को आगे बढ़ा सकते हैं।''

बोध प्रश्न III

टिप्पणीः अ) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की जांच कीजिए।

1. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में किस प्रकार के प्रमुख नैतिक मुद्दों का पालन किया जाना चाहिए? समझाएं।

_____

_____

_____

_____

_____

12.5 साइबर–स्पेस में नैतिक मुद्दे

प्रौद्योगिकी संचालित युग में, सूचना समाज/इन्फोस्फीयर में सूचना के संचय का ढेर लगा दिया गया है। सूचना की गुणवत्ता और उसके मिजाज से संबंधित चर्चा को काफी हद तक किनारे कर दिया गया है। ज्यादा समय पहले की बात नहीं है जब, साइबर स्पेस ने विकास के प्रारंभिक चरण में बातचीत और सार्थक जानकारी साझा करने के लिए स्थान देने की पेशकश की थी, केवल न्यूनतम मानक कोड के साथ इंटरनेट के विकास ने व्यावसायिक उद्यमों के लिए भारी पैसा बनाने की गुंजाइश पैदा की, जिसने बदले में गुणवत्ता को हानि पहुंचाना शुरू कर दिया। पूरे मानव इतिहास में हम सबसे ज्यादा सामग्री/सूचना के संपर्क में आए हैं। हालांकि, सामग्री की गुणवत्ता से साइबर–स्पेस में काफी समझौता किया गया है।

इंटरनेट हमारे जीवन का प्रमुख चालक बन गया है। यह हमारे दैनिक अस्तित्व का एक आंतरिक हिस्सा बन गया है और समाचार, संगीत, खेल, किराने का सामान, बैठक/मेलजोल स्थल, बिलों का भुगतान, रिश्तों, यात्रा टिकटों के हमारे ग्रहण को प्रभावित करता है। गूगल मानचित्र को एक अतिरिक्त विश्वसनीय तंत्र के रूप में विभिन्न मार्गों और गंतव्यों का पता लगाने के लिए शामिल किया गया है। बाह्य दुनिया में जाए बिना घर बैठे ही सब कुछ किया जा सकता है। डिजिटल साइबर स्पेस ने अपना अलग अस्तित्व बना लिया है। लेसिग (2006, पृ. 83) का कहना है कि ''साइबर–स्पेस, इसके विपरीत, जीवन को सिर्फ आसान बनाने के लिए नहीं है। यह जीवन को अलग, बल्कि बेहतर बनाने के लिए है। यह एक नया (या दूसरा) जीवन बनाने के बारे में है। यह जीवन में संवाद के ऐसे तरीकों को उद्घाटित करता है या आह्वान करता है जो पहले संभव नहीं थे।''

दुनिया के डिजिटल बदलाव ने दुनिया को काफी हद तक बदल दिया है। विचारकों के एक समूह ने 'उपभोक्ता समाज', 'निगरानी समाज', 'नेटवर्क समाज', 'तकनीकी समाज', 'सूचना समाज', 'उत्तर–औद्योगिक समाज', 'मीडिया युग', 'साइबर सोसाइटी', 'ज्ञान समाज', 'बॉर्डरलेस सोसाइटी' और 'पोस्ट–पूंजीवादी समाज' जैसे विभिन्न नाम देकर नए उभरते प्रतिमान को चित्रित करने और व्याख्या करने का प्रयास किया है। हम व्यावहारिक रूप से नए समाज को संदर्भित करने के लिए कोई भी उपयुक्त शब्द चुनने का निर्णय ले सकते हैं।

साइबर–स्पेस भौतिक सीमाओं को पार कर देता है । इसका स्वरुप अंतरराष्ट्रीय है और इसने स्थान और समय की पारंपरिक समझ को बदल दिया है। उदाहरण के लिए, ''ब्लैक

लाइव्स मैटर'' आंदोलन ने वैश्विक ध्यान आकर्षित किया और लोगों ने साइबर स्पेस की मदद से दुनिया के विभिन्न हिस्सों में आंदोलन के साथ ऐक्यभाव व्यक्त करना शुरू कर दिया। नस्लीय भेदभाव का एक क्षेत्रीय मुद्दा नए डिजिटल मीडिया की शक्ति के साथ एक अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बन सकता है। एक सरकार, कुछ कानून होने के बावजूद, अपनी नकली छवि, प्रथाओं और नीतियों की रक्षा के लिए अब किसी मुद्दे को स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं कर सकती है। साइबर–स्पेस, बहुत हद तक, पारदर्शिता और वैश्विक प्रतिक्रिया को बढ़ावा देता है ताकि स्वाभाविक रूप से अहितकारी और भेदभावपूर्ण प्रथाओं को समाप्त किया जा सके, जो प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के उत्कर्ष समय में भी मुख्य अनुपस्थित पहलू रहा। यह स्वाभाविक रूप से क्षेत्रीय और बहुराष्ट्रीय नैतिक आचरण की अप्रासंगिकता के कारण साइबर– स्पेस में वैश्विक नैतिक सिद्धांतों के लिए गुंजाइश पैदा करता है। लेकिन, इंटरनेट के संभावित नैतिक खतरे को पूरी तरह से कम नहीं किया जा सकता है। साइबर–स्पेस की उन्नति के लिए सभी राष्ट्रों को सामूहिक रूप से कुछ नैतिक नियमों और संहिताओं को विकसित करने के लिए काम करना चाहिए। अब इसे अलग–अलग देशों द्वारा पृथक रूप से संबोधित नहीं किया जा सकता ।

हमारा ध्यान साइबर समाज/युग के नैतिक मुद्दों को समझने पर है। नैतिक शास्त्र वास्तविक जीवन में हमारे नैतिक आचरण और व्यवहार के बारे में है ताकि समाज में एक–दूसरे के कल्याण को बढ़ाया जा सके। हमें इसे साइबर–स्पेस तक विस्तारित करना चाहिए ताकि इसके नैतिक आधार को समझा जा सके। साइबर–स्पेस में हैकिंग, पायरेसी, कॉपीराइट अनैतिक है क्योंकि ये नकारात्मक मूल्य विषय वस्तु के स्वामी से उसके उपयोग और विपणन के अधिकार को छीन लेते हैं, जिसे वह स्वयं के फायदे के लिए उपयोग करना चाहता हो। साइबर–स्पेस के एक उल्लेखनीय नैतिक दार्शनिक लॉरेंस लेसिग (2006) ने साइबर–स्पेस के नैतिक संलाप को विकसित करने के लिए कानून, कोड, मानदंड और बाजार को चार प्रमुख कारकों के रूप में पहचाना है।

वर्तमान मीडिया की एक पुनर्गठित स्थिति में, शकुंतला दास (2011) के अनुसार, ''स्थानीय'' (local) वैश्विक (global) नैतिक सिद्धांत को परिभाषित करने में विशेष बना रहेगा। वह ''ग्लोकल" (glocal) शब्द का उपयोग एक ज्ञानमीमांसीय इकाई के रूप में नई विश्व व्यवस्था और मीडिया के स्वभाव पर पर्दा डालने के लिए करती हैं। वैश्विक और स्थानीय विरोधाभासी नहीं हैं बल्कि नए स्थान में एक–दूसरे के पूरक हैं। मीडिया को अखंडता,

मानवीय गरिमा, निष्पक्षता, एक इकाई के रूप में संस्कृति के सम्मान, अहिंसा और सच्चाई को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक रूप से जिम्मेदार होना चाहिए।

साइबर–स्पेस में, गलत सूचना, दुष्प्रचार और फर्जी समाचार का मुद्दा एक गंभीर विषय के रूप में उभरा है जिस पर चर्चा और विचार करने की आवश्यकता है। किसी व्यक्ति, व्यक्तियों के समूह, समुदाय, संप्रदाय और संस्था की छवि को धूमिल करने के लिए बड़े पैमाने पर मीडिया का दुरुपयोग साइबर–नैतिकता में एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन गया है। साइबर–स्पेस हेट स्पीच , ट्रोलिंग, बदमाशी, धमकी, गुप्त पहचान और हिंसा को उकसाने का माध्यम भी बन रही है। ''नेट न्यूट्रैलिटी'' और साइबर–स्पेस तक सब की पहुंच एक न्यायसंगत और समतावादी समाज के विकास के लिए एक प्रारंभिक आवश्यकता है।

स्पिनेलो (2021) का तर्क है कि नेट संहिता (कोड) एक अत्यधिक उदारवादी लोकाचार का समर्थन और बचाव करती है जो व्यक्तिगत वक्ता/उपभोक्ता को प्रधानता देती है। इस तथ्य के बावजूद कि एक व्यक्ति उदारवाद का केंद्रीय बिंदु है, इसे हिंसा, अभद्र भाषा और बाल अश्लीलता को बढ़ावा नहीं देना चाहिए। कानूनों के निष्पादन और कार्यान्वयन के दौरान लोगों को निशाना बनाने के लिए एक चयनात्मक दृष्टिकोण नहीं अपनाया जाना चाहिए; अन्यथा आचार संहिता और आचरण का पूरा उद्देश्य खोखला और अर्थहीन हो जायेगा ।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को अनैतिक व्यवहारों और कॉर्पोरेट हितों को बढ़ावा देने के लिए हथियार नहीं बनाया जाना चाहिए। सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मों पर एक नया चलन देखा जा रहा है, मुक्त भाषण की आड़ में लोग गालियां देते हैं और एक व्यक्ति, समूह, समुदाय,जाति, पंथ, संस्कृति और धर्म के खिलाफ अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करते हैं। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सरासर दुरुपयोग और मिथ्याबोध है, इसे निश्चित रूप से दंडित किया जाना चाहिए। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार के अंतर्गत केवल तर्कसंगत आलोचना को सभ्यता की सीमाओं के भीतर उचित ठहराया जाना चाहिए। अन्यथा हेट स्पीच को जल्द ही एक न्यायसंगत नैतिक अभ्यास और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के एक अभिन्न अंग के रूप में परिभाषित कर दिया जाएगा। यह बर्बर और अमानवीय समाज के लक्षणों के तर्ज़ पर परस्पर –विरोध और असभ्य समाज को जन्म देगा।

यहां तक कि ऑनलाइन गेम जो हिंसा को आदर्श के रूप में बढ़ावा देते हैं, लिंग, समुदाय और देश के प्रति भेदभावपूर्ण हैं और उन्हें गलत अर्थ में प्रस्तुत करते हैं, उन्हें अस्वीकार कर देना चाहिए और उनसे कानूनी रूप से निपटना चाहिए । बौद्धिक संपदा अधिकारों और किसी के पेटेंट का सम्मान किया जाना चाहिए क्योंकि वे व्यापक बौद्धिक श्रम का नतीजा हैं, चाहे वह संगीत की मूल रचना हो, रचनात्मक कला कार्य, किताबें, लेख और मूल विचार हो। यह उपयोगकर्ताओं की नैतिक जिम्मेदारी है की वे रचनात्मक सामग्री के वास्तविक स्वामी को उचित सम्मान और आर्थिक लाभ दें।

बोध प्रश्न IV

टिप्पणीः अ) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए ।

आ) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. साइबर–स्पेस के प्रमुख नैतिक सिद्धांतों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

_____

_____

_____

_____

_____

12.6 मीडिया, न्याय और समाज

अगर मीडिया को सूचना और अभिमत की उत्पत्ति और प्रसार में उनकी भूमिका के कारण लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा बनना है, तो उस जानकारी और अभिमत की गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण मुद्दा होगा। (बेल्सी, 1998, पृष्ठ 10)

मीडिया के वैश्विक युग में हम मीडिया नैतिकता के लेख से न्याय के सिद्धांत को अनदेखा नहीं कर सकते। दार्शनिक जॉन रॉल्स (1921–2002) का कहना है कि 'न्याय सामाजिक संस्थाओं का पहला गुण है।' मीडिया एक सामाजिक संस्था है और न्याय को मीडिया और साइबर–स्पेस की निर्धारक विशेषता बनना चाहिए, इससे मीडिया समाज को बदलने के लिए एक प्रभावी उपकरण के रूप में उभरेगा। निष्पक्षता न्याय का प्रमुख घटक है। यदि कोई रिपोर्ट तथ्यों और सामाजिक सत्य के संदर्भ में निष्पक्ष नहीं है तो वह न्याय के निष्पक्षता सिद्धांत को कभी पोषित नहीं करेगी। बेज़बान और खासकर ऐसे समुदाय जो

कमजोर और हाशिये पर हैं उनकी चिंताओं और समस्याओं को शामिल करने के लिए स्टोरी निर्माण में मीडिया के हर स्तर पर विभिन्नता को बनाये रखना चाहिए।

मीडिया नैतिकता की सामान्य परिधि के अंदर मतों में जो भी भेद हों, सभी उदारवाद से वचनबद्ध हैं, पत्रकार वर्ग (फोर्थ एस्टेट) का विचार , और इसलिए समाचार और पत्रकारिता के अर्थ और लोकतंत्र और समाज के साथ उनके संबंधों से जुड़े हैं (बेरी, 2008, पृष्ठ 75)। मीडिया में समुदायवादी दृष्टिकोण यह तर्क देता है कि समाज को एक साथ रखने के लिए न्याय केंद्रीय विषय होना चाहिए। यह दृष्टिकोण लोगों के व्यक्तिवादी लालच को नहीं, बल्कि अधिक सद्भाव और शांति को बढ़ावा देता है। यह किसी भी लोकतंत्र में न्याय और शांति के ठोस और स्थायी मूल्यों का पोषण करेगा।

बोध प्रश्न V

टिप्पणीः अ) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए ।

आ) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. क्या मीडिया नैतिकता के विमर्श से न्याय को समाप्त किया जा सकता है? आलोचनात्मक मूल्यांकन करें।

_____

_____

_____

_____

_____

12.7 प्रेस की स्वतंत्रता, सेंसरशिप और कानून

प्रेस की स्वतंत्रता को पूर्ण अधिकार नहीं माना जा सकता है अगर यह किसी व्यक्ति के जीवन और गरिमा को गंभीर खतरे में डालती है। स्वतंत्रता कुछ उत्तरदायित्वों के साथ मिलती है; स्वतंत्रता निरपेक्ष नहीं है। किसी भी मामले में, अगर यह लोगों की सुरक्षा में व्यवधान डालती है और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बनती है, तो, निष्पक्ष रूप से, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नकारात्मक प्रयोग पर आंशिक सेंसरशिप को उचित ठहराया जा सकता है। साथ ही अगर हम ईमानदारी और निष्पक्षता से इसे किसी व्यक्ति, समूह और समुदाय की अखंडता और गरिमा के भंग करने, अशांति, हिंसा फ़ैलाने के संभावित खतरे के

रूप में देखते हैं, तो इसे प्रतिबंधित, निरीक्षित, और नियंत्रित किया जा सकता है। हालांकि, राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय और सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरे का हवाला देकर भाषण की वास्तविक स्वतंत्रता को कम करने के लिए प्रतिबंध न्याय संगत तर्क नहीं मानना चाहिए। सरकार को कानून नागरिकों के हित में उपयोग करते हुए निष्पक्ष रूप से लागू करना चाहिए बजाय कि वह इनका दुरुपयोग कर इन्हें आम नागरिकों, विपक्ष और नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं के विरूद्ध उनके द्वारा दी असहमति और निष्पक्ष आलोचना का अपराधीकरण करे। विचारशील मुक्त भाषण में अभद्रता, अश्लीलता, अपवित्रता और निन्दा का निषेध किया जाना चाहिए।

प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया (2020) ने पेड न्यूज का बहिष्कार कर सटीकता और निष्पक्षता बनाए रखने के लिए पत्रकारों को कुछ निर्देश दिए हैं। शकुंतला कहती हैं (2008, पृष्ठ 162), ''पी.सी.आई कोड बताता है कि स्वतंत्रता नैतिक पत्रकारिता की कुंजी है, लेकिन स्वतंत्रता अकेले जिम्मेदार पत्रकारिता की गारंटी नहीं हो सकती है और एक स्वतंत्र प्रेस को संयम के साथ काम करना चाहिए।'' मीडिया की स्वतंत्रता का प्रयोग सामाजिक और सार्वजनिक भलाई को बढ़ावा देने के लिए किया जाना चाहिए। समाज के उत्पीड़ित वर्ग के उत्थान के लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक न्याय प्रेस का वांछित उद्देश्य होना चाहिए। प्रेस की स्वतंत्रता अपने कार्य और व्यवहार के संयोजन में न्याय के सिद्धांत के प्रति उदासीन नहीं हो सकती।

हचिन्स आयोग (1947) ने ''ए फ्री एंड रिस्पॉन्सिबल प्रेस (एक स्वतंत्र और जिम्मेदार प्रेस)'' पर एक उल्लेखनीय रिपोर्ट प्रस्तुत की थी, जिसे अभी भी मीडिया के पाठ्यक्रम में निष्पक्ष और नैतिक मीडिया के मार्गदर्शक सिद्धांतों को निर्मित करने के लिए संदर्भित किया जाता है। यह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक जिम्मेदारी और स्वतंत्र अनुसंधान का समर्थन करती है। इसका गठन द्वितीय विश्व युद्ध के मद्देनजर किया गया था। किसी भी सभ्य समाज के लिए कानूनी और नैतिक मूल्य महत्वपूर्ण हैं। गरिमा, पारस्परिकता, समानता और विविधता मीडिया में कानूनों और संहिताओं के निर्माण में मार्गदर्शक मूल्य रहने चाहिये।

बोध प्रश्न VI

टिप्पणीः अ) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

आ) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. क्या 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' को पूर्ण अधिकार माना जा सकता है या नहीं? समझाइये।

_____

_____

_____

_____

_____

12.8 सारांश

मीडिया और साइबर–स्पेस की नैतिक संरचना के कोड और सिद्धांतों के बारे में कोई भी निर्णायक टिप्पणी करना एक कठिन कार्य है। फिर भी ऊपर उल्लेखित मूल्य समग्र रूप से ठोस और विभिन्न मूल्यों के समूह का सुझाव देते हैं जिनसे मीडिया की पूरी कार्य प्रणाली में नैतिकता का पता लगाया जा सकता है जिससे मीडिया और साइबर दुनिया के न्यायसंगत, निष्पक्ष और समतावादी स्थान को बढ़ावा दे सके।

इस इकाई से आसानी से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मीडिया के नैतिक ढांचे में नस्ल, जाति, धर्म, लिंग, लिंग और भाषाई भेदभाव को महत्व नहीं दिया जाना चाहिए। साइबर–स्पेस में विकृत तथ्यों और फर्जी खबरों की पहचान करने के लिए तथ्यों की स्वतंत्र जांच–पड़ताल करती वेबसाइटों को रेफेर किया जाता है। चर्चा किए गए नैतिक मूल्यों का पालन निश्चित रूप से मीडिया में पत्रकारों/व्यक्तियों को मीडिया के वास्तविक कार्य का सम्मान करने की स्वीकृति देता है, जो लोगों को सच्ची और प्रामाणिक जानकारी के साथ सूचित और शिक्षित करना है, ताकि वे ठोस और तर्कसंगत निर्णय ले सकें।

नैतिक सिद्धांतों का पालन किए बिना, अत्यधिक संभावना है, एक विश्वसनीय और न्यायसंगत मीडिया कभी अस्तित्व में नहीं आएगा और समाज को प्रतिकूल रूप से नुकसान पहुंचाएगा। मीडिया में नैतिक मूल्यों के विविध फ्रेमवर्क होने के बावजूद, मीडिया और साइबर–स्पेस को वास्तविकता में नैतिक बनाने के लिए अधिक और नए फ्रेमवर्क और दृष्टिकोणों का पता लगाने की संभावना हमेशा रहती है। साथ ही भविष्य में अधिक ठोस और व्यवहार्य नैतिक सिद्धांतों, संहिताओं, नियमों और मूल्यों की संभावना को कभी भी

नकारा नहीं किया जा सकता है, जिसे सराहना के साथ मीडिया और साइबर–नैतिकता के पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है।

12.9 कुंजी शब्द

- **मीडिया नैतिकता :** एक अलग अध्ययन के विषय के रूप में मीडिया नैतिकता, जो सच्चे, निष्पक्ष और मूल्य–आधारित मीडिया के विकास के लिए नैतिक संहिताओं, नियम और सिद्धांतों को विकसित करने का प्रयास करती है।
- **साइबरस्पेस :** साइबरस्पेस सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों (आईसीटी) की प्रगति के बाद अस्तित्व में आया। साइबरस्पेस को विभिन्न नामों से जाना जा सकता है जैसे डिजिटल स्पेस, इनफार्मेशन स्पेस, नेटवर्क स्पेस आदि।
- **साइबर–नैतिकता :** इसका उद्देश्य डिजिटल/साइबर स्पेस के लिए नैतिक मानदंडों और मानकों को विकसित करना है ताकि एक न्यायसंगत और समान डिजिटल/साइबर/ इनफार्मेशन स्पेस निर्मित कर सकें।

12.10 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

- बेलसे, ए. "जर्नलिज्म एंड एथिक्सः कैन दे को–एक्सिस्ट?" इन एम. कैरन (संपा.), *मीडिया एथिक्स* (पीपी. 1–14). लंदन, रूटलेज, 1998.
- बेरी डी. *जर्नलिज्म, एथिक्स एंड सोसाइटी.* इंग्लैंड एंड युएसएः अश्घाते पब्लिशिंग कंपनी, 2008.
- फीनबर्ग, ए. *क्यूसचेनिंग टेक्नोलॉजी.* लंदनः रूटलेज, 1999.
- ग्राहम, जी. "सेक्स एंड वायलेंस इन फैक्ट एंड फिक्शन" इन एम. कैरन (संपा.), मीडिया एथिक्स (पीपी 152–164). लंदनः रूटलेज, 1998.
- लेसिग, एल. कोड. न्यूयॉर्कः बेसिक बुक्स, 2006.
- मैकनेयर, बी. "जर्नलिज्म, पॉलिटिक्स एंड पब्लिक रिलेशन्सः एन एथिकल अप्रैज़ल". इन एम. कैरन (संपा), *मीडिया एथिक्स* (पीपी. 49–67). लंदनः रूटलेज, 1998.

- मेरिल, जे.सी. "फाउंडेशन फॉर मीडिया एथिक्स" इन ए.डी. जॉर्डन और जे. एम. किट्रॉस (संपा.). *कॉन्ट्रोवर्सीज इन मीडिया एथिक्स* (पीपी. 1 – 25). यूएसएः लॉन्गमैन, 1999.
- राव, एस. "ग्लोबल मीडिया एथिक्स". इन आर एस फॉर्टनर एन्ड पी एम फैकलर (संपा.) *द हैंडबुक ऑफ़ ग्लोबल कम्युनिकेशन एंड मीडिया एथिक्स* (पीपी. 154 – 170). यूकेः ब्लैकवेल, 2011.
- राव, एस. और वासरमैन, एच. (संपा.). "मीडिया एथिक्स एंड जस्टिस" इन *द एज ऑफ़ ग्लोबलाइजेशन.* यूकेः पालग्रेव मैकमिलन, 2015.
- सैंडर्स, के. *एथिक्स एन्ड और जर्नलिज्म.* लंदनः सेज प्रकाशन, 2003.
- स्पिनेलो, आर.ए. *साइबरएथिक्सः मोरालिटी एंड लॉ इन साइबरस्पेस.* बर्लिंगटनः जोन्स एंड बार्टलेट लर्निंग, 2021.

12.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1. मीडिया नैतिकता एक व्यापक विषय है। यह मीडिया के नैतिक कामकाज का मूल्यांकन करने की इच्छा रखता है। समाचारों के निर्माण से लेकर समाचारों के प्रसार तक मीडिया में नैतिकता शामिल है। मीडिया की, हमारी जानकारी और ज्ञान को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता होने के नाते, कुछ जिम्मेदारियां भी हैंरू इसलिए सत्य और निष्पक्ष समाचार प्राप्त करने के लिए कुछ नैतिक मानकों की आवश्यकता होती है। नीतिशास्त्र का व्यावहारिक विषय क्षेत्र है; इसलिए नैतिक संहिताओं, आचरणों और मूल्यों की वैचारिक प्रकृति पर विस्तार करने के बजाय, यह मीडिया में नैतिक सिद्धांतों के व्यावहारिक महत्व और अनुप्रयोग के लिए अधिक समर्पित है। यह आगे मीडिया की एक मानक रुपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, जो प्रामाणिक, पारदर्शी और जवाबदेह मीडिया के लिए आधार तैयार कर सकती है।

बोध प्रश्न II

1. प्रिंट मीडिया, मीडिया के शुरुआती रूपों में से एक है। लोग अभी भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और डिजिटल/साइबर मीडिया की तुलना में लिखित शब्दों पर अधिक भरोसा करते हैं। प्रिंट मीडिया में, नैतिक बनने के लिए, पत्रकारों को एक प्रासंगिक

मामला/कहानी चुननी चाहिए, न कि कृत्रिम जो लोगों के लिए उपयोगी न हो। कहानियां प्रामाणिक और मौलिक होनी चाहिए। पत्रकारों को कहानी/समाचार के बारे में लिखते समय विकृति, गलत बयानी और पक्षपात से बचना चाहिए। समाचार निष्पक्ष और सत्य होना चाहिए। समाचारों के निर्माण के लिए उपयोग किए जाने वाले सभी स्रोत सत्यापन योग्य और उचित होने चाहिए। किसी घटना के वास्तविक विवरण को प्रस्तुत करने के लिए समाचार वस्तुनिष्ठ और पारदर्शी होना चाहिए।

बोध प्रश्न III

1. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में छवियों के झूठे चित्रण से संबंधित मुद्दे, गलत जानकारी और विकृत जानकारी शामिल हैं। कभी–कभी दृश्य भ्रमपूर्ण होते हैं और पत्रकार केवल विकृत दृश्य प्रस्तुत करते हैं। इसका समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। वे एक व्यक्ति नस्ल, लिंग, समुदाय और धर्म को नीचा दिखा सकते हैं इसलिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रस्तुत सामग्री की अधिक सावधानी से जाँच और निष्पादन किया जाना चाहिए।

बोध प्रश्न IV

1. साइबर–स्पेस में विभिन्न प्रकार के नैतिक मुद्दे हैं। उनमें से कुछ में बौद्धिक संपदा, चोरी, हैकिंग, कॉपीराइट, गलत सूचना, दुष्प्रचार, नकली समाचार, पेटेंट ट्रोलिंग, हेट स्पीच, डिजिटल डिवाइड और बुलिंग शामिल हैं। साइबर–स्पेस में सभी प्रकार के भेदभाव, पहुंच और जवाबदेही साइबर–नैतिकता प्रवचन के आवश्यक अंग और खंड हैं। नैतिक मुद्दे प्रौद्योगिकी की मूलभूत संरचना से जुड़े हैं जिसने साइबर स्पेस के उदय को संभव बनाया।

बोध प्रश्न V

1. न्याय मीडिया की सामाजिक जिम्मेदारी का अहम हिस्सा है। नैतिकता और न्याय मौलिक रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। न्याय और निष्पक्षता के बिना, हम मीडिया के सही कारण और उद्देश्य का सम्मान नहीं कर सकते हैं, जो समाज के उपेक्षित और कमजोर वर्गों की आवाज़ को मुख्यधारा में लाना है। यदि मीडिया लोगों को सूचित और शिक्षित करके अपने उद्देश्य को साकार करने में सफल हो जाता है, तो यह अनिवार्य रूप से एक स्थायी और न्यायपूर्ण समाज के विकास में मदद करेगा।

बोध प्रश्न VI

1. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक मौलिक मानवीय मूल्य है। मनुष्य तर्कसंगत प्राणी हैं; इसलिए, उनके पास साझा करने के लिए हमेशा राय और विचार होते हैं। उन्हें बिना किसी रुकावट के ऐसा करने की अनुमति दी जानी चाहिए। हालांकि, यह स्वतंत्रता समाज को जीवित रखने के लिए निरपेक्ष/पूर्ण नहीं हो सकती। नकारात्मक उद्देश्यों के लिए किसी को भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को एक उपकरण के रूप में उपयोग करके लोगों को गाली देने और धमकी देने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। अपने ईमानदार, मूल विचारों को व्यक्त करने और तर्कसंगत आलोचना करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए, लेकिन मानवीय गरिमा, अखंडता, समुदाय, लिंग, संप्रदाय और धर्म की कीमत पर नहीं। हाल ही में दुनिया भर में एक प्रवृत्ति देखी गई है कि सरकारें समाज में असहमति जताने वालों के विरुद्ध उन्हें रोकने और दंडित करने के लिए इसका दुरुपयोग करती हैं, जो सरकार के फैसले और नीतियों से सहमत नहीं हैं। हालांकि, यह उल्लेखनीय है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पूर्ण नहीं हो सकती है और कुछ आवश्यक प्रतिबंधों के साथ आती है; इसका अर्थ यह नहीं है कि आलोचना और प्रश्न पूछने से बचने के लिए नियमों का अन्यायपूर्ण प्रयोग किया जा सकता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में उद्देश्य/नियत को पहचानना बहुत जरूरी है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY